28597_21034_1910034941_(2019-07-17 13:17:59)

TEST CODE: 21034

FIAS – 2019 – GS34A

ForumIAS
ACADEMY

GENERAL STUDIES

Name Of Candidate	RHEECHA RATNAM		
Email Id.	[redacted]	Roll No.	19100 34941
Mobile No.	[redacted]	Date:	16/7/2019

Time Allowed: One and Half Hours

Maximum Marks: 125

INDEX TABLE		
Q. No.	Max. Marks	Marks Obtained
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
Total Marks:		

INSTRUCTION

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Email, Roll No., Mobile).
2. There are TEN questions printed in ENGLISH.
3. All questions are compulsory.
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
5. Answers must be written in the medium authorized in the admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided.
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum Answer Booklet must be clearly Struck off.

Remarks:

Start Time| 6:00 PM	**End Time|** 7:30 PM
Mode Of Examination :	**Online** ☑ **Offline** ☐
ECN CODE:	**Evaluation Date:**

Parameters	Excellent	Very Good	Good	Average	Poor	Very Poor
Language						
Structure						
Presentation						
Handwriting						
Content						
Attempt						

ADDITIONAL COMMENTS

2018 © ForumIAS | All rights reserved

(Don't Write anything in this Area)

1. Do you consider the suspension of Non-Cooperation Movement a "national calamity"? Give arguments to support your view.

(10 Marks, 150 Words)

गाँधी द्वारा चौरी-चौरा कांड पश्चात् असहयोग आंदोलन वापस लेने की आलोचना कांग्रेस के नेताओं - चितरंजन दास, सुभाष चंद्र बोस इत्यादि द्वारा की।

* गाँधी द्वारा असहयोग आंदोलन वापस लेने संबंधी कदम को उनके विरोधियों द्वारा 'राष्ट्रीय आपदा' कहा गया।

(i) मार्क्सवादी इतिहासकारों के अनुसार 'गाँधी ने की-संघर्ष' रोकने हेतु यह कदम उठाया।

(ii) नेहरू, बोस, चौरी-चौरा में हुए घटना के कारण असहयोग आंदोलन वापस लेने पर आश्चर्यचकित थे।

(iii) असहयोग-खिलाफत के दौरान राष्ट्रीय एकता मजबूत, यदि यह आंदोलन सफल होता तो संभवतः 'द्विराष्ट्र सिद्धांत' का उदय न होता।

* गाँधी द्वारा असहयोग आंदोलन वापस लेने के पक्ष में तर्क :-

(i) गाँधी ने 'यंग इंडिया' में लिखा कि - आंदोलन हिंसक दौर में प्रवेश कर रहा था, जिसे रोकना आवश्यक था।

(Don't Write anything in this Area)

(ii) साम्राज्यवादी इतिहासकारों के अनुसार आंदोलन कमजोर पड़ चुका था।

(iii) लंबे समय तक जनआंदोलन करना मुश्किल, कोई भी जनआंदोलन लंबा नहीं खिंच सकता।
↳ जनता की सहन शक्ति सीमित होती है।

• जनआंदोलन 'संघर्ष - विराम - संघर्ष' की अवस्था में रहता है, ऐसे में असहयोग आंदोलन वापस लेना जनता के हित में था।

• साथ ही गांधी इससे यह संदेश भी देना चाहते थे कि, जनआंदोलन को उनके बनाए मार्ग का अनुकरण करना होगा, क्योंकि 'अहिंसा' का उल्लंघन अस्वीकार्य था।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

2. Trace the origin of the Ghadar movement and discuss its impact on the revolutionaries in India.

(10 Marks, 150 Words)

'गदर आंदोलन', उत्तर अमेरीका के अप्रवासी भारतीयों द्वारा सशस्त्र विद्रोह के माध्यम से भारत में ब्रिटिश राज्य की समाप्ति से जुड़ा, आंदोलन है।

गदर आंदोलन : उदय

- 1910 के दशक में अमेरीका व कनाडा में शहरी अप्रवासी भारतीयों (पंजाबियों) के व्यवसाय में
- इन श्रमिकों के मध्य तारकनाथ दास द्वारा राजनीतिक चेतना का प्रसार। (इन देशों में भारतीयों के साथ नस्लीय दुर्व्यवहार)
- सैन फ्रांसिस्को के (युगांतर आश्रम) में गदर आंदोलन की नींव, इन प्रवासियों द्वारा रखी गई।
- लाला हरदयाल ने इस आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 'गदर' पत्रिका का प्रकाशन, साथ ही गदर क्रांतिकारी 1857 के विद्रोह से प्रभावित होकर भारत में सशस्त्र आंदोलन करने की योजना बनाई गई।

(Don't Write anything in this A

- गदर क्रांतिकारियों ने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारत में ब्रिटिश सेना के भारतीय सैनिकों के साथ मिलकर विद्रोह की योजना बनाई, लेकिन C.I.D को इसका पता चल गया।
- कई क्रांतिकारियों को मृत्युदंड – सोहनसिंह भकना।

* गदर आंदोलन का भारतीय क्रांतिकारियों पर प्रभाव

1.) गदर आंदोलन – धर्मनिरपेक्ष क्रांतिकारी आंदोलन। भारतीय क्रांतिकारियों द्वारा भी इसे अपनाया गया।
↳ फलस्वरूप

गदर क्रांतिकारी – बरकतुल्ला, सोहन सिंह भकना, लाला हरदयाल
• हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन – धर्मनिरपेक्ष

2.) कई भावी क्रांतिकारियों द्वारा गदर क्रांतिकारियों से प्रेरणा ली गई

भगत सिंह → सोहन सिंह भकना से प्रभावित

3.) सशस्त्र विद्रोह द्वारा ब्रिटिश शासन उखाड़ने हेतु संगठित कार्यवाही को भी अपनाया गया।

इस प्रकार गदर आंदोलन ने भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन की 'दिशा' व 'दर्शन' में बहुमूल्य योगदान दिया।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

3. Discuss how the Satyagrahas of Gandhi removed the spell of fear among Indians and thus knocked off an important pillar of imperialism.

(10 Marks, 150 Words)

'सत्याग्रह', आत्मा की शक्ति या नैतिक बल के रूप में गाँधी द्वारा परिभाषित, जिनका उद्देश्य सर्वश्रेष्ठ नैतिक बल के प्रदर्शन द्वारा विरोधी का हृदयपरिवर्तन करना है।

* गाँधीवादी सत्याग्रहों ने निम्नलिखित प्रकार से जनता के मन में व्याप्त साम्राज्यवादी शासन के भय को निकालने में सहयोग किया :-

(i) चंपारण सत्याग्रह
↳ गाँधी द्वारा मजिस्ट्रेट के वापस घोड़े संबंधी निर्णय को अस्वीकार करना।
↳ सहयोगियों - राजेंद्र प्रसाद, ब्रजकिशोर की सहायता से कृषकों की शिकायतों को रिकॉर्ड कर, शासन के समक्ष प्रस्तुत करना।

जनता ने इसके पूर्व 'साम्राज्यवादी शासन' के आदेशों का उल्लंघन नहीं किया था।

अहिंसक तरीके से अपना आंदोलनों के प्रति जनता की जागरूकता बढ़ी।

(Don't Write anything in this Area)

(ii) असहयोग आंदोलन
- विदेशी कपड़ों की दुकानों व शराब की दुकानों पर प्रदर्शन, महिलाओं द्वारा बड़ी संख्या में भागीदारी।
- सार्वजनिक जीवन में महिलाओं का सक्रिय प्रवेश, जिससे उनमें व्याप्त 'पितृसत्तावादी' भयों में कमी आई।

(iii) बारदोली सत्याग्रह के दौरान, किसानों द्वारा लगान नाफरमानी व व्यापक पैमाने पर जमीन व पशुओं की जब्ती के बावजूद आंदोलन सफल रहा।
- जनता के मन में यह बात बैठ गई कि 'गांधीवादी सत्याग्रहों द्वारा औपनिवेशिक शासन के समक्ष अपनी मांग रखी जा सकती है'।

इस प्रकार गांधीवादी आंदोलनों ने औपनिवेशिक शासन की निरंकुश व सभ्यताकारी आलोचना से अधीनस्थ हुए भारतीय जन मानस में नवीन आत्मविश्वास का संचार किया, फलस्वरूप गांधीवादी आंदोलनों में जनता की भागीदारी बढ़ती गई।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

4. Sense of popular frustration combined with growing militant mood prepared the ground for final round of mass movement in 1942. Discuss

(10 Marks, 150 Words)

1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' की पृष्ठभूमि निर्माण में लोकप्रिय कुंठा (जनता व राजनीतिक दल) के साथ ही विद्रोही भावना की भी भूमिका रही।

* 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन : लोकप्रिय कुंठा

1.) कांग्रेस, ब्रिटिश सरकार के साम्राज्यवादी नीति के विरुद्ध।

– साथ ही (संविधान सभा गठन', 'राष्ट्रीय सरकार' निर्माण के मुद्दे पर औपनिवेशिक शासन के प्रति असंतोष

लिनलिथगो प्रस्ताव, क्रिप्स मिशन की असफलता

2.) जनता में बढ़ती मुद्रास्फीति, करों में वृद्धि को लेकर औपनिवेशिक शासन के प्रति असंतोष।

• साथ ही निम्नलिखित परिस्थितियों ने विद्रोही भावना को और भड़काया :-

(i) जापानियों द्वारा दक्षिण पूर्व में ब्रिटिश सेना को पराजित करना। (सिंगापुर, बर्मा)

(Don't Write anything in this Ar

- भारत में (ब्रिटिश शासन) जापानी आक्रमण की आशंका में वृद्धि।

(ii) सुभाष चंद्र बोस द्वारा 'ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध' छेड़ने की घोषणा।

(iii) द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीय सैनिकों की मृत्यु व वापस लौटे सैनिकों द्वारा ब्रिटिश सेना के पराजय व दुर्व्यवहार संबंधी विवरण।

(iv) समाजवादी नेताओं व युवाओं में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध बढ़ता असंतोष।

फलस्वरूप गाँधी ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान भारतीय जनता की मनःस्थिति को समझते हुए 'करो या मरो' का नारा दिया।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

(Don't Write anything in this Area)

5. Examine the role of Azad Hind Fauj or the Indian National Army (INA) in bequeathing a much needed impetus to India's struggle for Independence.

(10 Marks, 150 Words)

आज़ाद हिंद फौज (INA) का गठन सुभाषचंद्र बोस द्वारा जापान के सहयोग से किया गया था, जिसका उद्देश्य भारत में ब्रिटिश शासन की समाप्ति करना था।

- हालांकि INA अपने इस उद्देश्य में तो असफल रही, इसके बावजूद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में इसने महत्वपूर्ण योगदान दिया :↓

1.) INA के अधिकारियों के ऊपर, ब्रिटिश सरकार द्वारा किए गए ट्रायल का प्रभाव

↳ लाल किले में।

↳ कांग्रेस द्वारा इन अधिकारियों के बचाव हेतु समिति का गठन।

↳ इन ट्रायलों के से जुड़ी जानकारी जैसे जैसे सार्वजनिक हुई, ये अधिकारी उच्च दर्जे के देशभक्त प्रतीत हुए।

- फलस्वरूप कांग्रेस, मुस्लिम लीग, फॉरवर्ड ब्लॉक इत्यादि द्वारा इन ट्रायलों का विरोध।

2) भारतीय सैनिकों में राष्ट्रवादी चेतना का प्रसार
↳ कई अधिकारियों ने INA द्वारा के विशेषी आंदोलनों में भाग लिया.

3) शाही नौसेना विद्रोह (1946)
↳ नस्लीय दुर्व्यवहार व खराब भोजन के आधार पर विद्रोह।
↳ पाँच आयोग की रिपोर्ट के अनुसार नौसैनिक INA द्वारा से प्रभावित व राष्ट्रवादी भावनाओं। से युक्त थे।

इस विद्रोह ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब साम्राज्यवादी उद्देश्यों हेतु भारतीय सेना का उपयोग नहीं किया जा सकता। फलस्वरूप भारत के स्वतंत्रता संबंधी निर्णय में नौसैनिक विद्रोह की प्रमुख भूमिका रही, जो INA के विचारों से प्रभावित थी।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

6. The seed of communalism sown and nurtured by British grew into a mighty tree which brought forth its bitter fruit in the partition of India. Examine.

(15 Marks, 250 Words)

ब्रिटिश शासन द्वारा भारत में 'बाँटो और राज्य' की अपनाई गई नीति को अक्सर सांप्रदायिकता से जोड़ा जाता है।

• सांप्रदायिकता, एक ऐसी विचारधारा है जिसमें किसी व्यक्ति की धार्मिक पहचान, अन्य पहचानों पर प्रमुख हो जाती है।

ब्रिटिश शासन : सांप्रदायिकता के बीज की बुआई और विकास

1.) भारत को राष्ट्र के रूप में अस्वीकार करना।

उदाहरण :- जॉन स्ट्रैची - 'भारत नाम का कोई राष्ट्र नहीं'

2.) भारत के विभिन्न समुदायों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की नीति।

• 1909 - मार्ले-मिंटो सुधार - 'मुस्लिमों को पृथक निर्वाचकमंडल'।

3.) सांप्रदायिक पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन पर रोक नहीं

(Don't Write anything in this Area)

4.) सांप्रदायिक दंगों के दौरान त्वरित कार्यवाही न करना

उदाहरण :- कलकत्ता दंगे, 1946

5.) साइमन कमीशन में भारतीयों को शामिल न करना

↳ भारत के सभी दलों के हित अलग - बर्केनहेड

6.) 1940 के दशक में क्रिप्स मिशन द्वारा, संविधान निर्माण में राज्यों को अलग होने का अधिकार

7.) मुस्लिम लीग के द्विराष्ट्र सिद्धांत को स्वीकृति

1946 - एटली का भाषण

- इन नीतियों के कारण भारत में सांप्रदायिकता आधारित विभाजन गहरा हुआ।
- हालांकि, इन कदमों के बावजूद सिर्फ ब्रिटिश राज को भारत में 'सांप्रदायिकता' के लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि -

(i) 1905 के (बंगाल) स्वदेशी आंदोलन में विरोध के तरीके → धार्मिक

↳ राखी बांधना, शाक्त विष का प्रयोग।

(ii) सांस्कृतिक राष्ट्रवाद → 'भारत माता', अल्पसंख्यकों के धार्मिक मतों के विरुद्ध,

(iii) आर्य समाज तथा 20 वी - सदी में किए गए शुद्धि आंदोलन ने सांप्रदायिकता को और बढ़ाया।

(iv) सांप्रदायिक राजनीतिक दलों का उदय
- हिन्दू महासभा
- मुस्लिम लीग

↳ प्रारंभ में नरमपंथी सांप्रदायिकता।
↳ बाद में जिन्ना के 'सीधी कार्यवाही' ने सांप्रदायिक हिंसा को बढ़ावा दिया।

(v) मुस्लिमों को साथ लेकर चलने में कांग्रेस की विफलता (विपिनचंद्र)

फलस्वरूप राजकीय नीति के साथ ही भारतीयों के द्वारा धार्मिक पहचान पर दिए बल ने, अंततः विभाजन का मार्ग प्रशस्त किया, इसमें दो राय नहीं है।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

7. The Socialist Movement in India, emerged and established as an inseparable part of the nationalist struggle represented by the Indian National Congress. Elucidate.

(15 Marks, 250 Words)

20 वी. सदी के तीसो दशक में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन व राष्ट्रीय राजनीति में सशक्त 'वाम पक्ष' का उदय हुआ।

समाजवादी आंदोलन का उदय व विकास, कांग्रेस के साथ जुड़ा है।

भारत के समाजवादी आंदोलन का उदय व विकास भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अभिन्न अंग के रूप में

1) 1934 में 'कांग्रेस समाजवादी पार्टी' (कांसपा) का गठन
↳ कांसपा — कांग्रेस में ही रही।
— कांग्रेस के कार्यक्रमों को समाजवादी रूप दिया।

उदाहरण :- 1936 - फैजपुर कांग्रेस (किसान कार्यक्रम अपनाया)

2) जवाहरलाल नेहरू व सुभाष चंद्र बोस, समाजवादी विचारों से प्रभावित

नेहरू - 1929 लाहौर अध्यक्षीय भाषण' स्वयं को समाजवादी कहा

3.) कृषक आंदोलन

- विभिन्न प्रांतों में किसान सभाओं का गठन।

बिहार – सहजानंद सरस्वती द्वारा किसान सभा

- 1936 में लखनऊ कांग्रेस में 'अखिल भारतीय किसान सभा' का गठन।
- 1937 के चुनावों पश्चात् राज्यों में गठित कांग्रेस सरकारों द्वारा समाजवादी नीति अपनाना

उदाहरण :- अवध काश्तकारी अधिनियम

4.) श्रमिक आंदोलन

- असहयोग, सविनय अवज्ञा व भारत छोड़ो के दौरान कांग्रेस नेताओं द्वारा श्रमिक आंदोलनों में भाग

बोस → टाटा व हावड़ा में श्रमिक आंदोलन में भाग

- 'पब्लिक सेफ्टी बिल' व 'ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल' का विरोध।

5.) 1938 में राष्ट्रीय योजना समिति का गठन
↳ बड़े उद्योगों पर सरकारी स्वामित्व की सिफारिश।

इसके अतिरिक्त कराची में आयोजित 'मौलिक अधिकार व अल्पसंख्यक' कार्यक्रम भी समाजवादी विचारधारा से प्रभावित था।

स्वतंत्रता पश्चात नेहरू द्वारा अपनाए गए 'नियोजित अर्थव्यवस्था' व 'सहकारी समितियों को प्रोत्साहन' की नीति इत्यादि, समाजवादी विचारों से ही प्रभावित थी।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

(Don't Write anything in this Area)

8. Discuss the changes in British policies towards India brought by the outbreak of WWII and the response of various sections towards them.

(15 Marks, 250 Words)

1939 में वायसरॉय लिनलिथगो ने भारत के द्वितीय विश्व युद्ध में सम्मिलित होने की घोषणा की।

- वायसरॉय के इस एकपक्षीय निर्णय का विरोध करते हुए, प्रांतीय कॉंग्रेसी सरकारों द्वारा इस्तीफा दिया गया।

- इसके पश्चात् ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत के संबंध में निम्नलिखित नीतियां अपनाई गई :-

1.) राजनीतिक लिनलिथगो द्वारा 'अगस्त प्रस्ताव' की पेशकश
  - ↳ युद्ध पश्चात् संविधान सभा गठन।
  - ↳ अनिश्चित भविष्य में डोमिनियन स्टेटस
  - ↳ तत्काल वायसरॉय काउंसिल में भारतीय सदस्यों को सम्मिलित करना।
  - ↳ युद्ध परामर्शदात्री परिषद् का गठन

- 'अगस्त प्रस्ताव' : भारतीय के विभिन्न वर्गों की प्रतिक्रिया :-

(i) कॉंग्रेस द्वारा इसे अस्वीकार किया गया।

(Don't Write anything in this Area)

(ii) पंजाब की (मुस्लिम-जाट) यूनियनिस्ट पार्टी द्वारा स्वीकृति [सिकंदर हयात खान → युद्ध परामर्शदात्री तथा सदस्य।

(iii) दलितों के नेता अंबेडकर → वायसरॉय काउंसिल में 'श्रम सदस्य' बने।

(iv) मुस्लिम लीग द्वारा द्विराष्ट्र सिद्धांत।

2.) क्रिप्स मिशन | भारत के विभिन्न वर्गों की प्रतिक्रिया

क्रिप्स मिशन	भारत के विभिन्न वर्गों की प्रतिक्रिया
• संवैधानिक सुधारों की पेशकश।	• कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग द्वारा अस्वीकार।
3.) आर्थिक उद्योगों के प्रति संरक्षणवादी नीति अपनाना। ↳ भारतीय उद्योगों को लाभ। (उत्पादन में वृद्धि)	• 1942 के भारत छोड़ो अभियान दौरान L टाटा, बिड़ला - 'कांग्रेस के समर्थन'
4.) पूर्वानुमान के व्यापारियों के आक्रमण की आशंका को देखते हुए बंगाल व तटीय क्षेत्रों में 'वंचित करो' की नीति।	→ इन प्रदेशों में शासन के विरुद्ध आक्रोश बढ़ा।
5) साथ ही मुद्रास्फीति में वृद्धि, खाद्यान्न में वृद्धि	→ भारतीय जनता में औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध असंतोष बढ़ा

इसके अतिरिक्त 'कम्युनिस्ट पार्टी' पर से औपनिवेशिक शासन द्वारा प्रतिबंध हटाया गया।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटेन भारत के सहयोग जुटाने हेतु अपनी नीतियों में कुछ लचीलापन दिखाता रहा।

हालांकि यह भारतीय राष्ट्रवादियों व अधिकांश लोगों को संतुष्ट करने में विफल रहा।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

9. "I do not ask from you my own nonviolence. You can decide what you do in this struggle". Did Gandhiji deviate from his core principles during various phases of India's struggle for freedom? Give reasons.

(15 Marks, 250 Words)

महात्मा गाँधी द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन के समय 'सत्याग्रह' व 'अहिंसा' पर विशेष बल दिया गया, हालाँकि कई बार उनके कथनों से प्रतीत होता है कि जनता के लिए 'अहिंसा' का अर्थ अलग था।

* गाँधी द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन हेतु प्रयुक्त मौलिक सिद्धांत

- साधन - साध्य की पवित्रता पर बल। 'सत्याग्रह' - साधन, 'स्वतंत्रता' - साध्य,
- जो 'अहिंसा' पर टिका था।
- गाँधी जी के अनुसार 'अहिंसा' का अर्थ सिर्फ शारीरिक रूप से हिंसा न करना नहीं, बल्कि अपने विरोधी के प्रति बुरा मानसिक रूप से भी भाव न लाना है।
- ऐसे में, गाँधी ने नैतिकता आधारित स्वतंत्रता आंदोलन का मार्ग चुना।

परंतु यह सत्य है कि जनता के लिए 'अहिंसा' की इतनी कठोर परिभाषा लागू नहीं थी।

* स्वतंत्रता आंदोलन के चरण : गांधी के मौलिक सिद्धांतों में विचलन

1) प्रथम चरण - 1918-1922

'चंपारण सत्याग्रह' से गांधीवादी सत्याग्रह का प्रारंभ
'रौलट सत्याग्रह' के दौरान हिंसक गतिविधि बढ़ने पर
गांधी द्वारा आंदोलन वापस लेना।
'असहयोग आंदोलन' के दौरान, गांधी ने
अहिंसा पर बल दिया।
↳ चौरी-चौरा कांड - असहयोग आंदोलन वापस।
↳ गांधी ने 'यंग इंडिया' में लिखा -
आंदोलन को हिंसक होने से बचाने हेतु यह निर्णय

2) द्वितीय चरण - 1930-1934

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान भी, गांधी ने
'अहिंसक' रूप से नमक कानून तोड़ने पर बल दिया।
इस चरण के दौरान भी, गांधी द्वारा 'हिंसक
गतिविधियों' का विरोध।

(Don't Write anything in this Area)

3) तृतीय चरण – 1940 पश्चात्

- 'भारत छोड़ो आंदोलन' एवं गांधी उग्र मना! स्थिति में

गांधी - भारत को छोड़ दीजिए, अराजकता स्वीकार्य परंतु ब्रिटिश शासन नहीं

- गांधी द्वारा 'करो या मरो' का नारा।
- गांधी द्वारा ... जाए।
  ↳ भारतीय अपनी स्वतंत्रता छीने या जान जावे।
- यह आंदोलन प्रारंभ से ही हिंसक [अलग आत्मक आली - तोड़फोड़ ...]
- हालांकि गांधी ने जेल से निकलने के पश्चात्, सभी से 'समर्पण' करने व 'हिंसा त्यागने' की अपील की।

ऐसे में कह सकते हैं कि गांधी के आंदोलनों में 'अहिंसा' प्रारंभ से अंत तक अनुल्लंघनीय रही, हालांकि जनता ने अवश्य बार-बार इसकी अवज्ञा की।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

(Don't Write anything in this Area)

10. Explain the factors responsible for the recurrence of famines during British rule. What remedial measures were adopted by the British Indian Government?

(15 Marks, 250 Words)

ब्रिटिश शासन के दौरान (1765-1947) भारत में पड़े अकालों में 5 करोड़ से अधिक लोगों की मृत्यु हुई व 30 करोड़ से अधिक लोग प्रभावित हुए।

* ब्रिटिश शासन के दौरान बार-बार पड़ने वाले अकालों के कारण

1.) कृषि का पिछड़ापन
- ↳ पुरातन तकनीक का प्रयोग - हल-बैल।
- ↳ नवीन तकनीकों को नहीं अपनाना।
- ↳ उत्पादन कम।

2.) सार्वजनिक निवेश में कमी
- ↳ पंजाब व मद्रास के कुछ क्षेत्रों में ब्रिटिश शासन द्वारा (नहरों) सिंचाई सुविधाओं का निर्माण।
- ↳ सिंचाई का अभाव।

3.) भू-राजस्व की अधिक माँग
→ पूर्व में कंपनी प्रशासन व बाद में कठोर शासन

ForumIAS
28597_21034_1910034941_(2019-07-17 13:17:59)
(Don't Write anything in this Area)

द्वारा 'अधिकाधिक भू-राजस्व' वसूली की नीति अपनाना।

1770 — बंगाल अकाल

4) परंपरागत हस्तकला उद्योगों का पतन
↳ फलस्वरूप भूमि पर जनसंख्या दबाव में वृद्धि
↳ 'विऔद्योगीकरण' के कारण कृषि पर अधिक बोझ
(नौरोजी)

5) कृषि वाणिज्यिकरण :-
→ नील, कपास इत्यादि जैसे फसलों को उगाने पर शासन द्वारा प्रोत्साहन।
→ हालांकि कृषि वाणिज्यिकरण व अकालों में प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करना कठिन।

फलस्वरूप भारत में 1770 — 1943 (बंगाल अकाल) तक विभिन्न क्षेत्रों में अकाल पड़े।

• बाद के वर्षों में ब्रिटिश शासन द्वारा अकाल के संबंध में नीति अपनाई गई :-

1.) स्ट्रेची आयोग — 1876-78 के अकाल के दौरान लिटन द्वारा गठित।
• अकाल को रोकने हेतु आयोग द्वारा विभिन्न कदमों की सिफारिश की गई :-

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com
Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy

(i) अकाल पीड़ित क्षेत्रों में रोजगार उपलब्ध कराना।
(ii) इन क्षेत्रों में अनाज की जमाखोरी पर नियंत्रण।
(iii) कृषि में सार्वजनिक निवेश बढ़ाने की आवश्यकता।
(iv) पशुओं को चारा उपलब्ध कराना।

2.) मैकडोनल्ड आयोग

- अकाल हेतु राज्य को तत्काल कदम उठाने की आवश्यकता पर बल दिया।

- इन सबके बावजूद, ब्रिटिश शासन द्वारा अपनाई गई (अकाल नीति) अधिक सफल नहीं रही, व इसका उदाहरण 1943 का बंगाल अकाल है; जिसे औपनिवेशिक शासन की (वंचित करो) व बाद में पर्याप्त सहायता न करने की नीति ने बढ़ावा दिया।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

ForumIAS

Mentor Feedback Questions

1 .....

2 .....

3 .....

4 .....

5 .....

Test Goal

1 ..... ☐

2 ..... ☐

3 ..... ☐

Outcomes

.....

.....

.....

.....

.....

.....

Marking Scheme

Marks	Good	Average	Below Average
10 Marker	3.75 – 5.0	3.0 – 3.5	< 3.0
15 Marker	5.75 – 7.0	4.0 – 5.5	< 4.0

*Subject to change without prior notice.

For any suggestions and/or grievances regarding evaluation, please mail to : **asif@forumias.academy**